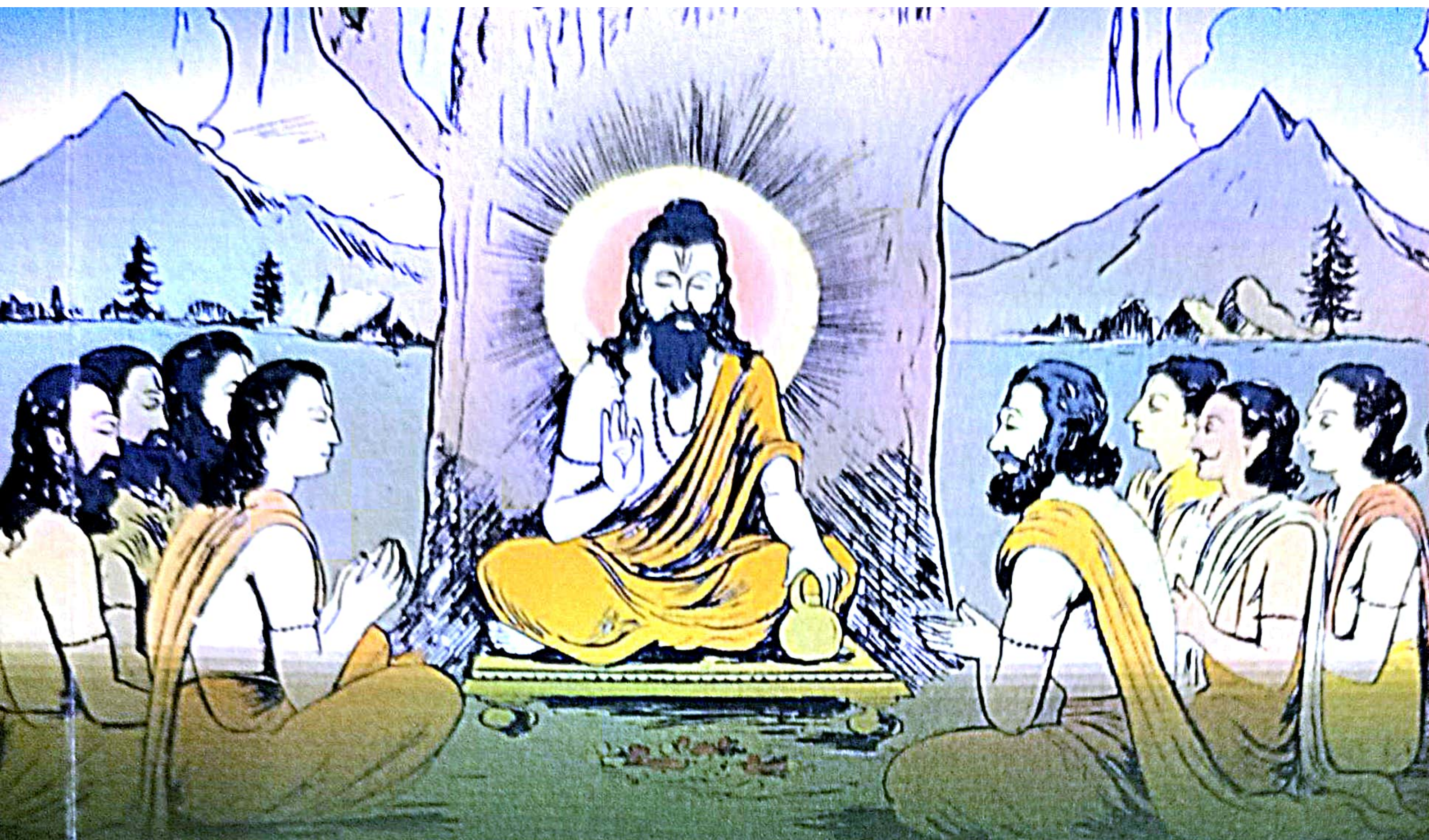

शिक्षा दर्शन एवं आचार्य परम्परा

डॉ. भुपेन्द्र कौर

Kalindi Prakashan

शिक्षा दर्शन एवं आचार्य परम्परा

डॉ.भुपेन्द्र कौर

कालिन्दी प्रकाशन
kalindiprakashan@gmail.com
Aira Bujurg, Azamgarh, U.P.

Published by :

कालिन्दी प्रकाशन
kalindiprakashan@gmail.com
Aira Bujurg, Azamgarh, U.P.

Mo. : +91 9140270320; +91 9453904139

© 2024 Dr. Bhupendra Kaur

Title : Shiksha Darshan Avam Acharya Parmpra

आईएसबीएन: 978-81-979932-1-3

मूल्य: ₹ 585/-

प्रथम संस्करण: सितम्बर 2024

कवर डिज़ाइन: सुमित सोलंकी

भारत में हिंदी भाषा में प्रकाशित

इस किताब के सभी अधिकार सुरक्षित हैं।

इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा, प्रकाशक और लेखक की लिखित पूर्वानुमति के बिना, पुनः प्रकाशित करना, प्रति निकालना, वितरण करना, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या किसी भी अन्य मेकैनिकल या इलेक्ट्रोनिक माध्यम के जरिए पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता हैं।

भूमिका

शिक्षा के दार्शनिक आधार पुस्तक का यह संस्करण विभिन्न विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम के अनुसार तैयार किया गया है। विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा दर्शन में रुचि लेने वाले सामान्य पाठकों के हाथ में यह पुस्तक प्रस्तुत करते हुए मैं विशेष हर्ष एवं संतोष का अनुभव कर रही हूँ। प्रस्तुत पुस्तक में पाठ्यक्रम की आवश्यकताओं को पूर्ण रूप से ध्यान में रखने की कोशिश की गई है। संसार में ज्ञान की सर्वप्रथम ज्योति भारत में प्रज्वलित हुई है। हमारे वेद और वेदों पर आधारित समस्त दर्शनों में ज्ञान के स्वरूप एवं ज्ञान प्राप्त करने के साधनों पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है।

किसी भी समाज की शिक्षा का स्वरूप विशेष रूप से उसके अपने स्वरूप, धर्म-दर्शन और अर्थतंत्र पर निर्भर करता है। शिक्षाशास्त्र अनुशासन का विकास पाश्चात्य देशों में प्रारंभ हुआ, इसलिए इसमें उनकी भूमिका और अनुभवों को भी शामिल किया गया है। भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्षों के बाद भी शिक्षाशास्त्र का विकास भारतीय पृष्ठभूमि के आधार पर नहीं हो सका। उपयोगी ज्ञान जहाँ से मिले, ले लेना चाहिए; ज्ञान किसी विशेष के लिए नहीं होता, उस पर तो सबका अधिकार है।

पुस्तक में विषय सामग्री की कठिनाइयों को समझने एवं उन्हीं के अनुभवों के आधार पर समझकर दूर करने का प्रयास किया गया है, लेकिन पूर्णता का दावा नहीं करते, अतः पाठकों से निवेदन है कि पुस्तक में सुधार हेतु विचार या सुझाव अवश्य साझा करें।

इस पुस्तक को पूरा करने में ईश्वर की कृपा और पूजनीयों का आशीर्वाद रहा है, मैं उन सबके प्रति आभार प्रकट करती हूँ, विशेषकर उन लेखकों एवं प्रकाशकों के प्रति जिनके ग्रंथ-रत्नों से सहयोग लिया गया है।

डॉ.भुपेन्द्र कौर

□□□

अनुक्रम

भूमिका 3

शिक्षा Education 7

- डॉ. भुपेन्द्र कौर

दर्शन Philosophy 25

- डॉ. भुपेन्द्र कौर, डॉ.प्रणीता मिश्रा

शिक्षा दर्शन Education Philosophy 42

- डॉ. भुपेन्द्र कौर, डॉ.भावना सिंह

भारतीय दर्शन का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

Historical Perspective of Indian Philosophy 59

- डॉ. भुपेन्द्र कौर, पूजा सिंह

आदर्शवाद IDEALISM 80

- डॉ. भुपेन्द्र कौर, डॉ.अमित कुमार दूबे

प्रकृतिवाद NATURALISM 99

-डॉ. वैशाली तोमर

शिक्षा में प्रकृतिवाद NATURALISM 121

- प्रो. राजकुमारी सिहं

प्रयोजनवाद Pragmatism 130

- डॉ. भुपेन्द्र कौर

यर्थाथवाद Realism 149

- डॉ. भुपेन्द्र कौर

मार्क्सवाद MARXISM 172

- डॉ. भुपेन्द्र कौर

अध्याय-7

शिक्षा में प्रकृतिवाद (NATURALISM)

प्रो. राजकुमारी सिहं
शिक्षाशास्त्र विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (यू0पी0)

प्रस्तावना (Introduction)

शिक्षा में प्रकृतिवाद का अर्थ ऐसी शिक्षा व्यवस्था से है जिससे बालक अपनी प्रकृति के अनुसार विकसित होता रहे। यूं तो प्रकृतिवादी आन्दोलन को शिक्षा के क्षेत्र में प्रारम्भ करने का श्रेय बेकन तथा कमेनियस को है परन्तु रुसो ने इस आन्दोलन को चरम सीमा तक पहुँचाया।

प्रकृति शब्द के दो अर्थ है (1) भौतिक प्रकृति (Physical Nature) तथा (2) बालक की प्रकृति (Nature of the child) भौतिक प्रकृति- बाहय प्रकृति है तथा बालक की प्रकृति- आन्तरिक प्रकृति है जिसका अर्थ उन मूल प्रवृतियों, आवेगों, प्रवृतियों तथा क्षमताओं से है जिनको लेकर बालक जन्म लेता है।

प्रकृतिवाद के अनुसार बालक को स्वाभाविक रूप से विकासित करने के लिये बाहय प्रकृति के नियमों को उसकी आन्तरिक प्रकृति के अनुसार प्रयोग में लाना चाहिये।

शिक्षा में प्रकृतिवाद (Naturalism in Education)

प्रकृतिवादी दर्शन का विकास जगत के आरंभ से ही माना जाता है। आश्चर्यमयी प्रकृति के भौतिक तत्वों ने मनुष्य को जगत के आरंभ से ही चिन्तन की प्रेरणा दी। अतः थैलीज ने जगत का मूल कारण जल को माना। एनक्सीमेडर ने अग्नि की वास्तविकता को स्वीकार किया तथा एम्पीक्लीज ने पृथ्वी, अग्नि, जल तथा वायु को स्थाई तत्व घोषित किया। भारत में भी वैदिक काल से ही मनुष्य के विचार अग्नि, जल, वायु तथा पृथ्वी से संबंधित रहे हैं। फलस्वरुप भारतीयों ने भी इन सभी

तत्वों को देव रूप में आरम्भ से ही अंगीकृत किया है। इस प्रकार भारतीय दर्शन में प्रकृतिवाद की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। यद्यपि प्रकृतिवाद अत्यन्त प्राचीन विचारधारा है, परन्तु इस दर्शन को आधुनिक शिक्षा में विकसित करने का श्रेय अठ्ठारवीं शताब्दी में प्रकृति - विज्ञानों के क्षेत्र में होने वाली क्रांति को है। जिसके नायक बने (1) वोल्टायर एवं (2) रूसो

प्रकृतिवाद के सिद्धांत (Principles of Naturalism)

प्रकृतिवाद के प्रमुख सिद्धांत निम्नलिखित है -

(1) संसार (Universe) एक महान यंत्र है। मनुष्य भी इस महान यंत्र का भाग है और अपने में पूरा भी।

(2) जीवन प्राणविहीन पदार्थ से विकसित होता है तथा भौतिक एवं रासायनिक प्रभावों का समूह है।

(3) मनुष्य की समस्त शक्तियां उसकी प्रकृति के अनुसार सीमित है। यह अपनी जन्मजात शक्तियों तथा मूल प्रवृतियों के सिवाय और कुछ नहीं है।

(4) मनुष्य अपनी प्रकृति के अनुसार पृथ्वी का उच्चतम पशु है। अतः उसके जीवन का सार पाशविकता है, न कि आध्यात्मिकता।

(5) वर्तमान जीवन वास्तविक जीवन है। इसके पश्चात कोई अन्य जीवन अथवा दूसरी दुनिया नहीं है। अतः मनुष्य को अपने वर्तमान जीवन को सुखी बनाना चाहिये।

(6) वास्तविकता केवल बाहय प्रकृति की ही है। प्रत्येक वस्तु प्रकृति से उत्पन्न होती है तथा इसी में विलीन हो जाती है, परन्तु प्रकृति के वाहय नियम कभी नहीं बदलते।

(7) अपरिवर्तनीय प्राकृतिक नियम संसार की समस्त घटनाओं को स्पष्ट करते हैं।

(8) वास्तविकता की सच्ची व्याख्या केवल प्राकृतिक विज्ञानों के द्वारा ही हो सकती है।

(9) मनुष्य के सांसारिक जीवन को भौतिक दशाओं में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का श्रेय वैज्ञानिक खोजों तथा मशीनों के आविष्कारों को है। अतः प्राकृतिक विज्ञानों का ज्ञान प्राप्त करना परम आवश्यक है।

(10) अंतिम सत्ता भौतिक तत्व है। ईश्वर, अंतरात्मा मन, परलोक इच्छा की स्वतन्त्रता, नैतिक प्रवृत्तियां, प्रार्थना तथा अमानवीय चमत्कार सब भ्रम है।

(11) विचार प्राकृतिक वातावरण पर निर्भर करते हैं। इनका जन्म उस समय होता है अब किसी नाडी, नस, अथवा पुठ्ठे पर किसी प्राकृतिक उत्तेजना का प्रभाव पड़ता है।

प्रकृतिवादी शिक्षा की विशेषतायें (Characteristics of Naturalistic Education)

(1) प्रकृति की ओर लौटो (Back to Nature)

रुसो के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'एमील एंड एजुकेशन' का सर्वप्रथम वाक्य ही उसके अंतरदर्शन का परिचय देता है - "प्रकृति के निर्माता के हाथों में सभी वस्तुऐं अच्छे रूप में मिलती है, परन्तु मानव के संपर्क में आते ही वे सब दूषित हो जाती है।"

प्रकृतिवाद शिक्षा के तीन साधनों- प्रकृति, मनुष्य तथा वस्तुओं में केवल प्रकृति को सबसे ऊंचा स्थान देता है। अतः प्रकृतिवाद की पहली विशेषता है- प्रकृति की ओर लौटो। प्रकृतिवादियों के अनुसार बालक की महान शिक्षिका केवल प्रकृति ही है, अतः बालक को उसकी प्रकृति के अनुसार विकसित होने के लिए प्राकृतिक वातावरण प्रस्तुत करना चाहिए।

(2) पुस्तकीय ज्ञान का विरोध (Opposition of Bookish Knowledge)

प्रचलित शिक्षा में पुस्तकों को बलपूर्वक रटाकर ज्ञानी बनाने का प्रयास किया जाता था। प्रकृतिवान ने इसका विरोध किया और बालक के जीवन को क्रियाशील रूप से प्रभावित करके उससे स्वाभाविक विकास पर बल दिया। प्रकृतिवाद के अनुसार बालक की शिक्षा केवल करके सीखना तथा निरीक्षण एवं अनुभव द्वारा ही होनी चाहिए।

(3) प्रगतिवादी (Progressive)

प्रकृतिवादी शिक्षा बालक को एक गत्यात्मक प्राणी मानती है जिसका विकास मिरन्तर होता रहता है। इस विकास की चार भिन्न-भिन्न स्थितियाँ हैं- (1) शैशव, (2) बाल्य, (3) किशोर तथा (4) प्रौढ़। इन चारों स्थितियों में से प्रत्येक स्थिति की अलग अलग विशेषताएं होती हैं। प्रकृतिवादियों ने इस बात पर बल दिया कि

बालक की शिक्षा की व्यवस्था इन स्थितियों को ध्यान में रखते हुए होनी चाहिए। रूसो के अनुसार - "प्रकृति चाहती है कि बालक मनुष्य बनने से पहले बालक है रहे। यदि हम इस क्रम को बदलेंगे तो हम अगेते फल उत्पन्न करेंगे। जिनमें पकावट तथा गन्ध न होगी।"

(4) निषेधात्मक शिक्षा (Negative Education)

प्रकृतिवाद की एक विशेषता उसका निषेधात्मक होना भी है। जे. एस. रॉस. के अनुसार- निषेधात्मक शिक्षा का अर्थ निकम्मेपन का समय नहीं। यह गुण की शिक्षा नहीं अपितु अवगुण से रक्षा करती है। उससे सत्य की शिक्षा नहीं होती, पर गलती से बचाती है। यह बालक को उस मार्ग पर चलने देती है, जो उसे बड़ा होने पर सत्य की ओर ले जायेगा। यह मार्ग बालक को उस समय अच्छाई की ओर ले जायेगा जब उसमें अच्छाई को पहचानने की योग्यता पैदा हो जायेगी।

(5) बालक की केन्द्रीय स्थिति (Central Position of the child)

प्रकृतिवादी बालक को शिक्षा रूपी प्रक्रिया का केन्द्र बिंदु मानते हैं। प्रकृतिवादियों का मानना है कि बालक शिक्षा के लिए नहीं वरन शिक्षा बालक के लिये है। अतः शिक्षा की व्यवस्था इस प्रकार होनी चाहिये कि बालक अपनी प्रकृति अर्थात जन्मजात शक्तियों तथा रुचियों एवं रुझानों को अपनी इच्छा के अनुसार विभिन्न क्रियाओं में भाग लेकर बिना किसी मार्गदर्शन के स्वयं ही विकसित कर सके।

(6) बालक की स्वतंत्रता (Freedom of the child)

प्रकृतिवादियों का विश्वास है कि जब तक बालक के सम्मुख स्वतंत्र वातावरण प्रस्तुत नहीं किया जायेगा तब तक उसका स्वाभाविक विकास नही हो सकेगा। प्रकृतिवादी शिक्षा-प्रणाली बालक को हर प्रकार के बन्धनों, बाधाओं तथा उलझनों से मुक्त करके स्वतंत्र वातावरण में विकसित होने पर बल देती है। रुसो का विचार था कि प्रत्येक मनुष्य स्वतंत्र पैदा होता है। भगवान किसी को बन्धन में नहीं डालता, सारे बन्धन मनुष्य रचित ही हैं। उसने अपनी पुस्तक में लिखा है-"प्रकृति के निर्माता के हाथ से आने वाली प्रत्येक वस्तु मंगलकारी है परन्तु मनुष्य के हाथों में आकर उसका ह्रास हो जाता है।"

इन्द्रियों के प्रशिक्षण पर बल (Emphasis on rhe training of Senses)

प्रकृतिवादियों के अनुसार ज्ञान को प्रभावशाली बनाने के लिये इन्द्रियों को प्रशिक्षित करना परम आवश्यक है। इसका कारण यह है कि इन्द्रियों ज्ञान के द्वार हैं। इन्द्रियों के प्रशिक्षण पर बल देते हुए रूसों ने लिखा है, शिक्षा को इन्द्रियों का उचित प्रयोग करके झान के द्वार खोलने चाहिए।

शिक्षा में प्रकृतिवाद की देन (Contribution of Naturalism in Education)

(1) बालक का प्रमुख स्थान प्रकृतिवाद की विशेषता है। आज हमें इस बात पर आश्चर्य नहीं होता किन्तु 19वीं शताब्दी के अन्त तक लोग बालक को प्रौढ़ का छोटा रुप मानते थे, उसका अलग व्यतित्व मानने को तैयार न थे। 'बाल केन्द्रित शिक्षा'-प्रकृतिवाद की देन है।

(2) बालमनोविज्ञान के अध्ययन की प्रेरणा भी इसी विचारधारा ने दी। मनोविज्ञान ने बताया कि बालाक विकास काल में विशेष स्थितियों से हो कर गुजरता है। यही नहीं मनोविज्ञान की एक विशेष शाखा-मस्तिष्क विश्लेषण को तो विशेष प्रोत्साहन मिला।

(3) शिक्षा की विधि में प्रकृतिवाद ने शब्दों की अपेक्षा अनुभवों पर बल दिया। केवल शब्द शिक्षा के लिये आवश्यक गुण नहीं है अनुभव भी आवश्यक है। इसलिये अब भूगोल और इतिहास के पाठों में परिभ्रमण एवं शिक्षा-यात्राएं भी संलग्न है।

(4) शिक्षा में "खेल की प्रमुखता" इस विचारधारा की की देन है। इससे पूर्व खेल व्यर्थ की चीज समझा जाता था। प्रकृतिवाद ने खेल को स्वाभाविक एवं आवश्यक सिद्ध किया।

(5) "प्रकृति की ओर लौटो" इस विचारधारा का प्रमुख नारा है। उसका कथन है "सभ्यता की जटिलता से दूर प्रकृति की शान्तिमयी गोद की और चलो"। इस प्रवृति ने प्रकृति-प्रेम में वृद्धि की।

(6) केवल "पुस्तकीय ज्ञान को हटाकर" अनुभव तथा ज्ञान को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया।

प्रकृतिवाद तथा शिक्षा के उद्देश्य (Naturalism and Aims of Education)

(1) मानव मंत्र को पूर्ण बनाना-यन्त्रवादियों के अनुसार यह सम्पूर्ण विश्व एक

महान यंत्र के समान है। मनुष्य इस बड़े यंत्र का एक भाग है तथा अपने में पूर्ण भी। अतः शिक्षा का उद्देश्य बालक में इस प्रकार के व्यवहार को विकसित करना है कि वह एक कुशल यंत्र की भांति कार्य कर सके।

रॉस ने इसी विचार की पुष्टि करते हुए लिखा है-"शिक्षा का कार्य है कि वह मानव यंत्र को अधिक से अधिक अच्छा बनाये, जिससे वह अपने आगामी जीवन में आने वाली कठिन समस्याओं को कुशलतापूर्वक सुलझा सके।"

(2) वर्तमान तथा भावी प्रसन्नता व सुख की प्राप्ति-प्रकृतिवाद के अनुसार मानव का लक्ष्य वर्तमान तथा भावी प्रसन्नता व सुख को प्राप्त करना है। अतः शिक्षा का उद्देश्य इनकी प्राप्ति में सहयोग देना है। परन्तु मैकडूगल ने इस सुख-दुख के सिद्धान्त का समर्थन न करते हुये बताया कि सुख अथवा दुख का जन्म तो प्राकृतिक प्रक्रिया के परिणामस्वरूप होता है। अतः उसने इस बात पर बल दिया कि बालक की मूल प्रवृत्तियों का शोधन, उचित दिशा में मार्गान्तीकरण तथा उनका समन्वय करना ही शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए।

(3) जीवन संघर्ष के लिए तैयार करना-डारविन जीवन के लिए संघर्ष तथा समर्थ की विजय नामक सिद्धांत में विश्वास करता था। इस सिद्धांत के अनुसार मानव का विकास जीवन निम्न स्तरों से हुआ है। उसे संसार में जीवित रहने के लिये वातावरण से निरंतर संघर्ष करता पड़ता है। इस जीवन में शक्तिशाली की विजय होती है तथा निर्बल का अस्तित्व नष्ट हो जाता है। अतः डारविन के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बालक की उन शक्तियों का विकास करना है जो उसे जीवन संघर्ष के लिये तैयार करके जीवित रहने योग्य बना दे।

(4) वातावरण के साथ अनुकूलन-नव लैमार्कवादी भी इस बात को मानते हैं कि मानव का विकास जीवन के निम्न स्तरों से हुआ है। परन्तु उनका यह विश्वास है कि प्राणी में अपने आपको, अभी आदतों को तथा अपने शरीर के ढांचे को अपनी परिस्थितियों के अनुकूल बनाने की शक्ति है। अतः नव-लैमार्कवादियों के अनुसार शिक्षा वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति को उसके वातावरण तथा परिस्थितियों के अनुकूल बनाने में सहयोग प्रदान करती है। इस दृष्टि से शिक्षा का उद्देश्य बालक को इस योग्य बनाना है कि वह अपने वातावरण तथा परिस्थिति के साथ अनुकूलन कर सके।

(5) जातीय प्राप्तियों का सुधार-प्रकृतिवादी विद्वान् बर्नार्डशॉ का मत है कि शिक्षा का उद्देश्य जातीय प्राप्तियों की सुरक्षा करना तथा उनके विकास की प्रक्रिया को आधिक गति देना है। जे. एस. रॉस के शब्दों में - "इस प्रकार शिक्षा पीढ़ी दर पीढ़ी उन जातीय प्राप्तियों के संरक्षण, अगलों को सौंपने तथा वृद्धि का नाम है।"

(6) प्राकृतिक विकास-रुसो ने स्पष्ट शब्दों में बताया कि हमें बालक को स्वस्थ एवं शक्तिशाली बनाने के लिये उसकी शारीरिक क्षमता तथा व्यक्तिगत विभिन्नता को ध्यान में रखते हुये उसकी प्राकृतिक प्रवृत्तियों को स्वतंत्र रूप से विकासत करना चाहिये। अतः बालक को उसकी प्रकृति के अनुसार विकसित करना ही प्रकृतिवादी शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य है।

(7) वैयक्तिकता का अनियंत्रित विकास-नन (Nunn) महोदय ने शिक्षा के उद्देश्य का निर्माण करते समय वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा प्रकृतिवादी दर्शन को अपनाते हुए बताया कि शिक्षा का उद्देश्य वैयक्तिकता का अनियंत्रित विकास करना है। अतः शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिये कि प्रत्येक बालक का निजी व्यक्तित्व विकसित हो जाये।

सारांश (Summary)

प्रकृतिवाद को भौतिकवाद अथवा पदार्थवाद की संज्ञा भी दी जाती है। प्रकृतिवादियों के अनुसार पदार्थ ही जगत का आधार है। मन भी पदार्थ का ही रूप है। अथवा पदार्थ का ही एक तत्व है अथवा दोनों का मेल है। प्रकृतिवाद के अनुसार केवल प्रकृति ही सब कुछ है। इससे परे अथवा उसके बाद और कुछ नहीं है । अतः मानव को प्रकृति की खोज करनी चाहिये जो केवल विज्ञान द्वारा ही सम्भव है। प्रकृतिवादियों का मानना है कि वर्तमान सभ्यता तथा सामाजिक विकास के कारण मानव प्रकृति से दूर हो गया है। प्रकृति के निकट आने पर उसका प्राकृतिक अथवा स्वाभाविक विकास हो सकेगा। इस प्रकार प्रकृतिवादियों के अनुसार अन्तिम सत्ता प्रकृति है। प्रकृतिवाद के मुख्य नारे 'प्रकृति की ओर लौटो' 'समाज के बन्धनों को तोड़ो' इत्यादि है। सभ्यता का लचीलापन समाप्त होने पर यह वाद जन्म लेता है। प्रकृतिवाद मनुष्य को पशु का विकसित रूप मानता है। प्रकृतिवाद तथा वैज्ञानिक नियमों की सार्वभौमिका पर वे बल देते है। प्रकृतिवादियों का उद्देश्य स्वच्छन्दता

तथा मूलप्रवृतियों का विकास करना है। प्रकृतिवादी सभ्यता की जटिलता से परे, प्राकृतिक सरलता की ओर मुड़ना चाहते हैं। प्रकृतिवाद में शिक्षक तथा अनुशासन का मूल नहीं है। शिक्षा की विधियों की ओर उनका ध्यान अधिक है। प्रकृतिवाद में मुख्य रूप से विशेषताओं में 'प्रकृति की ओर लौटो' पुस्तकीय ज्ञान का विरोध, प्रगतिवादिता निषेधात्मक शिक्षा, शिक्षा में बालक की केन्द्रीय स्थिति, तथा बालक की स्वतंत्रता और उसकी इन्द्रियों के प्रशिक्षण पर बल आदि आते है।

सन्दर्भ-सूची

1. पचैरी, डॉ. गिरीश- शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ, 2009, पेज नं0 96-110।
2. वरिश्ठ, डॉ. के.सी.- वर्तमान भारतीय समाज और प्रारम्भिक शिक्षा, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 2016, पेज नं0 70-86।
3. पाण्डेय, प्रोफेसर रामशकल-पाश्चात्य तथा भारतीय शिक्षा दर्शन, विनय रखेजा C/O आर0लाल बुक डिपो, मेरठ, पेज न0 10-32।
4. सक्सैना, एन0 आर0 स्वरूप एवं चर्तुवेदी डॉ. शिखा, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, विश्वज्ञानकोष Volume-I आर0 लाल0 बुक डिपो, मेरठ, पेज न0 421-438।
5. मित्तल, प्रो0 एम0एल0 एवं रखेजा उदिता- उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, इण्टरनेशलन पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ, 2009, पेज न0 135-151।
6. पाण्डेय, डॉ. रामशकल-शिक्षा दर्शन, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, पेज0 नं0 109-145।
7. चैबे, एस0पी0 एवं चैबे, ए0- शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ।
8. गुप्ता, एस0पी0, भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्याएं, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
9. त्यागी, गुरसरनदास, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजिक आधार, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

10. बनर्जी एस0सी0- 'पुरूषार्थ' भारतीय परम्परा में विज्ञान के लिए प्रासंगिक दार्शनिक अवधारणाओं में, खण्ड- 3, भाग-5, 2008, पी0के0 सेन (सं0) नई दिल्ली PHISPC।
11. क्लार्क, केली जेम्स (सं0), द ब्लैकवेल कम्पेनियन टू नेचरिज्म, 2016, विली ब्लैकवेल, ऑक्सफोर्ड।
12. Nalanda Open University http://www.nou.ac.in
13. whttps://hi.m.wikipedia.org>wiki
14. भारतीय भौतिकवाद, इंटरनेट इनसाइक्लोपीडिया ऑफ फिलॉसफी में अबीगैल टर्नर-लौक वर्निकी (डू यूनिवर्सिटी) द्वारा प्रविष्टि।
15. शांतिदेव, इंटरनेट इनसाइक्लोपीडिया ऑफ फिलॉसफी में आमोद लेले (स्टोनहिल कॉलेज) की प्रविष्टि।

❑❑❑